पहला सुख निरोगी काया

यही वजह है कि स्वास्थ्य के बिगड़ जाने पर उसे किसी भी विधि से पुनः प्राप्त करना अति आवश्यक है। किंतु किसी भी प्रक्रिया का उपयोग करने के साथ-साथ यह भी विचार करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि चयनित विधि न केवल हमारे रोग का उपचार ही करें , वरन् हमें आश्वस्त करें कि हम समग्र रूप से अधिक सशक्त होंगे। आजकल किसी भी प्रकार की जटिल बीमारी का उपचार उपलब्ध है किंतु उसमें अधिकतर मामलों में विभिन्न केमिकल्स का औषधि के रूप में इंजेक्शन के माध्यम से या फिर शरीर में चीरा लगाकर उसे प्रविष्ट कराया जाता है । अब चाहे वो गोली हो जो आप निगलते हैं या फिर जो इंजेक्शन आप लेते हैं, उसके कुछ न कुछ दुष्प्रभाव तो अवश्य होता ही है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि तात्कालिक इलाज भले ही हो जाता है किंतु आवश्यक नहीं कि उपचार भी हो ।

आज के आधुनिक युग में अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धतियाँ उपलब्ध हैं जिनमें अनेक परिष्कृत और उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे -रोबोटिक्स, उन्नत चिकित्सकीय उपकरण, अत्याधुनिक इमेजिंग तकनीक, बगैर चीरा लगाए शल्य क्रिया आदि का उपयोग किया जाता है। किन्तु उपरोक्त चिकित्सा विधियों में भी इंजेक्शन और सूक्ष्म चीरा तो लगता ही है। यह कहना मुनासिब होगा कि इन चिकित्सकीय प्रणाली द्वारा उपचार प्रक्रिया के दुष्प्रभावों से बचा नहीं जा सकता। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि कई बार मृत्यु रोग के कारण न होकर दवाओं के दुष्प्रभाव द्वारा ही हो जाती है।

आगे हम इन दिनों उपलब्ध विभिन्न उपचार के तरीकों को जानेंगे और साथ ही यह भी जानेंगे कि वे किस तरह रोगों का उपचार करते हैं और औषधियों को शरीर में प्रविष्ट कराने हेतु कुछ और बेहतर विकल्प भी हैं क्या ?

आधुनिक चिकित्सा पद्धति में ये तीन विधियां ज्यादा प्रचलित हैं -

1. **खाने वाली गोलियाँ** - इसमें औषधि पहले शरीर में पचती है और फिर जाकर रक्त में मिलती है जहां वह श्वेत रक्त कणिकाओं से लड़ते हुए रोग ग्रसित अंग में पहुंचती है। यह एक लंबी प्रक्रिया है। इसके अलावा शरीर की पाचन प्रणाली से गुजरने के दौरान औषधि में से केवल वे ही घटक तत्व, जो शरीर की रचना से मेल खाते हैं वे ही रक्त में आत्मसात हो पाते है। बचा हुआ तत्व अवांछित पदार्थ -मल, मूत्र,पसीना या कफ के रूप में शरीर से बाहर निकल जाता है। यह चिकित्सा की एक प्रचलित किन्तु जटिल विधि है।
2. **इंजेक्शन** -इस प्रक्रिया में औषधि सुई के द्वारा सीधे रक्तप्रवाही नलिकाओं में पहुंच जाती है। किंतु इसे भी रोग ग्रसित अंग तक पहुंचने हेतु श्वेत रक्त कणिकाओं के विरोध का सामना करना पड़ता है ।
3. **श्वांस** के द्वारा - यह एक ऐसी विधा है जिसमें औषधियां श्वांस के द्वारा सीधे शरीर में पहुंचाई जाती हैं जैसे- ऑक्सीजन ,क्लोरोफॉर्म आदि।

औषधि उपरोक्त कौन सी विधि से ली गई अगर निरपेक्ष होकर यह भी विचार करें तो यह विचार उभरता है कि उसमें उस अपेक्षित सूक्ष्मता का अभाव होता है जो रोग कारक विषाणु या जीवाणुओं को नष्ट या निष्प्रभावी कर सकें।एंटीबाडी के रूप में दी गयी औषधियां पोषक नहीं होती बल्कि सिर्फ नष्ट करने के प्रभाव वाली होती हैं। दूसरी ओर कोई सिरप यदि पोषक गुणों से युक्त है, वह किंन्तु रोग कारक सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट करने में सक्षम नहीं होता | अगर हम दोनों को एक साथ मिला कर दें तो वे एक दूसरे के प्रभावों को शून्य या निष्क्रिय कर देते हैं और इससे शरीर को कुछ भी लाभ नहीं पहुंचता।

सभी चिकित्सक इस बात को भलीभाँति जानते हैं कि कोशिकाओं का पोषण सिर्फ रक्त से ही नहीं होता है। श्वास की प्रक्रिया से जो भी पोषक तत्व शरीर में प्रविष्ट होते हैं,वे शरीर के स्वस्थ होने के प्रमुख कारक होते है और उनका महत्व भोजन से किसी भी प्रकार कम नहीं। रक्त की तरह प्राण भी पूरे शरीर में निरन्तर संचारित रहता है और पोषक तत्वों के प्रदान करने के साथ साथ अवांछनीय तत्वों के निष्कासन का दोहरा दायित्व निभाता है।

अतः यह स्पष्ट है कि यज्ञ चिकित्सा एक सरल, प्रभावी और समग्र चिकित्सा पद्धति है जिसमें रोग कारक सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट करने और शरीर को पोषक तत्व देने वाले औषधीय पदार्थों को यज्ञ की अग्नि में धूम्रीकरण कर के सूक्ष्म रूप से शरीर में श्वास द्वारा प्रविष्ट कराया जाता है।औषधीय तत्व वाष्प के रूप में शरीर में जा कर रोग को नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार पाचन क्रिया या शरीर के प्रतिरक्षण तन्त्र - श्वेत रक्त कणिकाओं - से बिना प्रभावित हुए औषधीय तत्व सीधे रोग प्रभावित भागों में पहुंचते हैं।

चूंकि औषधि युक्त धुएं और वाष्पीकृत दवा में एंटीबायोटिक और स्वास्थ्य-संवर्धक दोनों गुण होते हैं, अतः यज्ञ चिकित्सा का उपयोग न केवल रोगों के इलाज हेतु किया जा सकता है अपितु अच्छे बैक्टीरिया के विकास एवं पोषण तथा सफेद रक्त कोशिकाओं की रक्षा शक्ति एवं जीवन शक्ति को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। औषधीय पदार्थों को धूमीकृत करने से उत्पन्न वाष्पीकृत परमाणुओं का एक स्वतः का चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है जिसके कारण यह वायुमंडल से वांछित तत्वों को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

प्रकृति रचनात्मक और ध्वंसात्मक दोनों प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती है। यही वजह है जब रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया स्वस्थ कोशिकाओं पर हमला करते हैं, तो प्रकृति बीमारी से लड़ने के लिए एक अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है | यज्ञ धूम्र प्रकृति से इन तत्वों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और आगे बढ़कर इन जीवों को पैदा करने वाली बीमारी पर हवाई हमला करते हैं। शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अपने WBC के साथ रोग के जीवाणुओं पर जमीनी हमला करती है। यह बहुआयामी लड़ाई बीमारी से लड़ने और स्वास्थ्य को बहाल करने में अत्यंत प्रभावी है। यज्ञ धूम्र न केवल बीमार लोगों को बल्कि स्वस्थ व्यक्तियों को भी उनकी जीवनी शक्ति को बढ़ाने और उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने हेतु अत्यंत कारगर है।

हमें सूक्ष्मीकरण प्रक्रिया के प्रभावोत्पादकता को स्वीकार करने की जरूरत है। आज हमारे पास एक से बढ़कर एक उन्नत मशीनें होने के बावजूद भी कोई भी व्यक्ति फूलों से शहद मधुमक्खियों से बेहतर नहीं निकाल सकता है। जब औषधीय पदार्थ धूमीकृत होते हैं, तो वाष्पशील पदार्थ शरीर के पोषण के लिए गुणकारी ऊर्जा को आकर्षित करने और अवशोषित करने के लिए आसपास के वातावरण में फैल जाते हैं। प्रकृति ने शारीरिक स्वास्थ्य को अपनी प्राकृतिक स्थिति में बनाए रखने के लिए एक वातावरण बना रखा है और उन्हीं सिद्धांतों का उपयोग यज्ञ चिकित्सा में किया जाता है।

भारतीय शास्त्रों में यज्ञ के ज्ञान विज्ञान का विस्तृत विवरण मिलता है | रोग नियंत्रण एवं बचाव के लिए हमारे शास्त्रों में विभिन्न औषधियों का विस्तृत उल्लेख मिलता है| ब्रह्मवर्चस रिसर्च इंस्टीट्यूट, हरिद्वार यज्ञ थेरेपी की प्रभावकारिता प्रमाणित करने के लिए कई वैज्ञानिक सतत अध्ययन और प्रयोग कर रहें रहा हैं | इस संस्थान के तत्वावधान में कई शोध पत्र और डॉक्टरेट अध्ययन किए जा रहे हैं। यह दूर नहीं है जब इस उपचार पद्धति को व्यापक स्वीकृति प्राप्त होगी और हर कोई समग्र चिकित्सा और स्वास्थ्य के लाभों को प्राप्त कर सकता है

पत्रिका पे वापस जायें